उत्तराखण्ड के सीमांत जनपद पिथौरागढ़ का एक ऐतिहासिक परिचय

डॉ0 शिल्पी श्रीवास्तव
सी–12, साउथ सिटी
रायबरेली रोड, लखनऊ–226025, उ0प्र0, भारत
dksflow@hotmail.com

सारांश

प्रस्तुत लेख में उत्तराखण्ड के सीमांत जनपद पिथौरागढ़ का एक ऐतिहासिक परिचय दिया गया है। इसका उद्देश्य उन विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों की ऐतिहासिक दृष्टिकोंण से सही जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध कराने की है जिसके लिए शोधार्थियों को अनावश्यक रूप से यहाँ–वहाँ भटकना पड़ता है।

भूमिका

नवसृजित राज्य उत्तराखण्ड का वर्तमान सीमांत पिथौरागढ़ जनपद(**चित्र–1,2,3**), जिसकी सीमाएं पूर्व में नेपाल तथा उत्तर में तिब्बत से मिलती हैं, कुमाऊँ कमिश्नरी का एक महत्वपूर्ण सीमान्त जनपद है। पिथौरागढ़ नगर इस सीमान्त जनपद का मुख्यालय है, जिसके उत्तर में ध्वज पर्वत, दक्षिण में एंचोली, पूर्व में भाटकोट, पश्चिम में बजेठी ग्राम स्थित है। पिथौरागढ़ नगर प्राचीन काल से ही पवित्र कैलास मानसरोवर यात्रा का पथ रहा है। इस नगर की पौराणिक(कूर्मपुराण के अनुसार) ऐतिहासिकता स्कन्द पुराण के अन्तर्गत मानसखण्ड के कैलास मानसरोवर यात्रा पथ में वर्तमान नगर के वर्णित स्थलों से सिद्ध होती है।

पिथौरागढ़ के इतिहास के तीन महत्वपूर्ण तथ्य हैं–मेरु पर्वत, अशोक मल्ल, पिथौरागढ़। जनपद की उत्तरी सीमा पर स्थित हिमाच्छादित नन्दादेवी–पंचाचूली पर्वतमाला का वैदिक ऋषि मेरु ने विस्तृत अध्ययन किया जिससे वह मेरु पर्वत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बर्फ से ढके होने से यह पर्वतमाला श्वेत वर्ण की है। प्रातः और सायंकाल जब सूर्य की किरणें केवल इसी में सिमट जाती हैं तब यह सुनहरे रंग का दिखाई देने से पुराणों और अभिलेखों में **सुमेरु** कहलाया। स्कन्दपुराण के मानसखण्ड में पिथौरागढ़ के पर्वत, नदी, मार्ग और जंगलों के साथ ऋषियों के आश्रमों की भी विस्तृत चर्चा की गई है। इस ग्रन्थ का प्रारम्भ मेरु पर्वत में रहने वाले देवताओं की स्तुति से किया गया है। मानसखण्ड के अनुसार–रामगंगा और सरयू नदी के संगम पर रामेश्वर के समीप बशिष्ठाश्रम, दारमा के **दर** नामक स्थान पर **धर्माश्रम** और ब्यांस का **ब्यांसाश्रम**, कैलास मानसरोवर की पैदल यात्रा के समय महत्वपूर्ण पड़ाव थे। पिथौरागढ़ नगर के बसने से पूर्व कैलास के यात्री रामेश्वर से गंगोलीहाट के कालिका मन्दिर , पाताल भुवनेश्वर, बेरीनाग के पुंगेश्वर और थल के बालेश्वर होते हुए डीडीहाट जाते थे। डीडीहाट के समीप **थर्प**, **हाट** और **सीराकोट** में मल्ल राजवंश की राजधानी के अवशेष मिले हैं। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा अशोक मल्ल(1253–1276 ई0) हुआ जिसने संस्कृत भाषा में **नृत्याध्याय** नामक ग्रन्थ लिखा। उसके शासनकाल में गंगोलीहाट में 1264 से 1276 ई0 तक **गन्धीविहार** का निर्माण हुआ। गंगोलीहाट के जान्धवी नौले के पास स्थित दसावतार मूर्ति की तरह की मूर्तियाँ पिथौरागढ़ में कासनी, मरसोली , डीडीहाट में हाट , अस्कोट में देवल, नेपाल में ऊंकू, चमोली में आदि बदरी तक पाई गयी हैं। इस शैली की मूर्ति के शीर्ष में घुंघराले बालों वाला ध्यानस्थ बुद्ध दिखाकर **बौद्धावतार** सिद्धान्त को स्पष्ट किया गया है। बत्यूली गांव के प्राप्त चन्दकालीन राजस्व बहियों से पता चलता है कि भूपतिमल्ल ने गढ़वाल के बदरीनाथ मन्दिर और अर्जुनमल्ल ने केदारनाथ मन्दिर को कई गांव दान में दिये थे।

पिथौरागढ़ नगर के संस्थापक कत्यूरी राजा पिथौरा का असली नाम प्रीतमदेव था। मध्यकालीन इतिहासकार **हातिकी** के अनुसार राय पिथौरा समरकन्द के सुल्तान तैमूर लंग का समकालीन था। जब तैमूर 1398 ई0 में दिल्ली और मेरठ को लूटने के बाद हरिद्वार की ओर बढा तो रुड़की के समीप कलियर शरीफ(पीरान कलियर) में कत्यूरियों ने प्रीतमदेव के भतीजे और लखनपुर के राजकुमार ब्रह्मदेव के नेतृत्व में उसे रोकने का प्रयास किया था। कत्यूरी जागरों में शिवालिक के सवा लाख शिखरों में नौ लाख सेना उतारने का उल्लेख अतिश्योक्तिपूर्ण हो सकता है लेकिन दिल्ली की तुर्क सेनाओं को शिवालिक में रोक देने के कारण राजस्थान के **रासो** और बुन्देलखण्ड के **आल्हा** की तरह हिमालय में **जागर**(जागृति के गीत) नामक लोक काव्यों को जन्म दिया। पिथैारा की पत्नी जियारानी पुत्र धामदेव और पौत्र मालूशाही की कहानियां पर्वतीय गांवों की लोक गाथायें बन गई जिन्हे हरिद्वार से डोटी–जुमला(नेपाल) तक आज भी सुना जा सकता है।

पिथौरागढ़ में एक साथ तीन संस्कृतियों का जन्म हुआ। संस्कृत साहित्य में कैलास मानसरोवर के यात्रा पथ पर **किरात** नामक जाति का उल्लेख मिलता है जो गुफाओं में निवास करती थी और जंगल की वस्तुओं से अपनी आजीविका चलाती थी। लकड़ी के बर्तन, शहद, चमड़ा, तांबा और औषधियों के क्षेत्र में इस जाति ने विशेष सफलता पायी। मानसखण्ड में नन्दादेवी द्वारा एक किरात को सोना देने की कथा है। हवेनसांग ने सातवीं सदी में **सुवर्णगोत्र** नामक स्थान पर **स्त्री राज्य** उल्लेख किया है। उसके समकालीन बाणभट्ट ने कैलास के यात्रा पथ पर किरातों की राजधानी **सुवर्णपुर** का उल्लेख किया है। डीडीहाट में एक विशाल पत्थर (जाखिलोक ढुंड) पर पचास से अधिक कपमार्क बने हैं। यह महापाषाण कालीन सभ्यता का स्मृतिस्थल है। धौली, गोरी और सरयू नदी के बालू में छनकर चींटी के बराबर सोने के कण मिलने से इस क्षेत्र का सोना **पिलीलक स्वर्ण**(चींटी=पलीलिका) कहलाता था। बाद में तिब्बत बाजार से भी सोना आने लगा। अस्कोट के क्षेत्र में रहने वाली वनरौत जाति प्राचीन किरात राज्य की उत्तराधिकारी है। किरातों की महिलाओं ने ही पांचवी से सातवीं सदी के मध्य **स्त्री राज्य** की स्थापना की जिसका विस्तृत विवरण **जैमिनीय अश्वमेधिका** नामक ग्रन्थ में है। इस ग्रन्थ की अनेक पाण्डुलिपियां पिथौरागढ़ में पायी गई हैं। सन् 1863 ई0 की पाण्डुलिपि की पुष्पिका से पता चलता है कि ब्रिटिश काल में पिथौरागढ़ में रहने वाली सेना में भी स्त्रीराज्य की रानी प्रमिला के युद्ध की कहानी सुनायी जाती थी, उसी में **पिठौरागढ़ी सेनावसतौ** का उल्लेख है।

किरात, खस और ऋषियों की संस्कृति से पिथौरागढ़ की संस्कृति का निर्माण हुआ। पिथौरागढ़ के हर गांव में एक ऊंचे टीले को **कोट** कहा जाता है। गंगोलीहाट का माणीकोट, डीडीहाट का सीराकोट, जाख गांव का धुमकोट और पौण गांव का उच्चकोट प्राचीन गिरिदुर्ग के उदाहरण हैं। इन कोटों में लाल और काली मिट्टी के बर्तनों के अवशेषों की समानता से यह कहा जा सकता है कि यहाँ **कोट सभ्यता** का एक युग रहा है। जिस पहाड़ी पर ये कोट बनाये गये हैं उनके शीर्ष को काटकर समतल बनाया जाता था। इस पहाड़ी पर चढ़ने के लिए केवल एक ओर से मार्ग होता था तथा तीन ओर से पहाड़ी काटकर सुरक्षा की दृष्टि से दुर्गम कर दी जाती थी। पिथौरागढ़ नगर के उत्तरी छोर पर आधुनिक राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज के पास 1960 ई0 तक एक तिमंजिला ईटों का बना किला था, जिसको **पिथौरा किले** के नाम से लोग जानते थे। 1790 से 1815 ई0 तक नेपाल की गोरखा फौजों ने कुमाऊँ पर अधिकार रखा। उस समय गोरखा सेना के उस किले में रहने से उसे **गोरख्यांक** किला भी कहा जाने लगा था। पिथौरागढ़ में प्रचलित झोडा(रास), जागर(ताण्डव) और छलिया(छल्लिक) नृत्यों का उल्लेख मालवा के राजा भोज परमार(1005–1055 ई0) के ग्रन्थों में होने से स्पष्ट है कि एक हजार वर्ष से लोकनृत्य प्रचलित रहे हैं। दल्लिक नृत्य को भोज ने पर्वतीय क्षेत्र में प्रचलित वीर और श्रंगार प्रधान नृत्य कहा है। पिथौरागढ़ में चैत्र पूर्णमासी को बाइस गांवों में घुमाये जाने वाले **चैतोल** को भावप्रकाश में **चैत्रयात्रा महोत्सव** कहा गया है। इसी तरह हिलजात्रा को **त्रिपुरदाह डिंडिम** कहते थे। डिंडिम उस नाटक को कहते हैं जिसमें यहाँ के लोग मुखौटा लगाकर नृत्य करते है। गौरा–माहेश्वर लोकनाट्य को भरत ने नाट्यशास्त्र में **त्रिपुरदास डिंडिम** कहा है। यह कैलास मानसरोवर के यात्रा पथ का सबसे प्राचीन लोकनाट्य है।[1]

पिथौरागढ़ नगर लोक देवता, गौरिल, हरू, सैम आदि की पवित्र भूमि तथा हिलजात्रा कृषि नाट्य के भगवान शिव का रंगमंच है। इस नगर में किरात, नाग, खस, कत्यूरी, बम, चन्द, गोरखा, अंग्रेजी शासन व स्वतंत्रता के वर्तमान स्वरूप का लम्बा इतिहास छुपा हुआ है। तेरहवीं सदी में वर्तमान पिथौरागढ़ नगर महत्वपूर्ण सोर राज्य के रूप में स्थापित थी, जिसकी सीमाएं नेपाल के डोटी राज्य व चम्पावत के चन्द राज्य से मिली हुयी थी, यह नाम अंग्रेजी शासन काल तक चलता रहा। इसका प्रमाण चन्द शासकों के ताम्रपत्र, शिलालेख, लोकसाहित्य, जनश्रुतियां तथा भूमि सम्बन्धी(चन्दकालीन, गोरखाकालीन,अंग्रेजकालीन) दस्तावेज हैं। एटकिंसन[2] ने भी अपनी पुस्तक में सोर शब्द का उल्लेख किया है।

सोर (शोर देश) का नामकरण

पिथौरागढ़ का नामकरण सोर क्यों हुआ इस सम्बन्ध में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। डा0 भण्डारकर[3] नें अपनी पुस्तक **अशोक** में सोर को एक नाग जाति बताया है, कुछ विद्वानों का यह कथन है कि यह नाग जाति प्राचीन काल में इस स्थान पर आकर बस गयी थी अतः इस स्थान का नाम सोर हुआ। आज भी नगर में नागों से संबंधित कथाएं प्रचलित हैं, व नागों की पूजा की जाती है, जो इस कथन को प्रमाण प्रदान करती है। यहाँ नाग जाति को कष्यप व कूद्र की संतान भी माना जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि इस स्थान पर प्रारम्भ में सात सरोवर थे, जो बाद में सूख गये, इन्ही सरोवरों के कारण यह स्थान सोर कहलाया है।

वर्तमान आंकलन

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि सोर प्राचीन नाम था तो इस स्थान का वर्तमान नाम पिथौरागढ़ क्यों हो गया ? इस संबंध में निम्न कथन प्रचलित हैं–

1. राय पृथ्वी शाही (पिथौरा शाही) नामक एक कत्यूरी शासक ने सोर पर अपना अधिकार कर लिया था, इसी शासक पृथ्वी शाही(**चित्र सं0 4/2.1**) के नाम से इस स्थान का नाम पिथौरागढ़ हुआ। परन्तु राय पृथ्वी शाही के शासनकाल का तिथि क्रम अभी तक स्पष्ट नही हो पाया है।
2. सात सरोवरों के सूखने से सोर में पथरीली भूमि का उदय हुआ और यह भूमि पिथौरागढ़ अर्थात पत्थरों का गढ़ कहलायी।
3. कुछ विद्वानों का मत है कि सोलहवीं सदी में लक्ष्मी चन्द नामक चन्द शासक के एक अधिकारी पीरु गुंसाई ने सोर में एक किले का निर्माण करवाया , जिस कारण इस स्थान का नाम पिथौरागढ़ कहलाता है। यह किला वर्तमान में भी इस नगर में विद्यमान है।
4. कुछ लोगों का मत है कि वर्तमान किले के नीचे बसे प्राचीन गांव पितरौटा(देवकुल) के नाम से यह नगर अपभ्रंष होकर पिथौरागढ़ कहलाया।

उपर्युक्त कथनों में सत्य क्या है, यह कहना कठिन है परन्तु ताम्रपत्रों, भूमि संबंधी दस्तावेजों तथा जनश्रुतियों से यह बात सिद्ध होती है कि **ष्सोरष्** पिथौरागढ़ का प्रारम्भिक नाम है व पिथौरागढ़ अंग्रेजी शासनकाल के मध्य उत्पन्न हुआ है। इस कथन की प्रमाणिकता इसलिए प्राप्त होती है क्योंकि अभी तक किसी ताम्रपत्र में या चन्दकालीन स्रोत में पिथौरागढ़ शब्द नही आया है, वरन इस स्थान को सोर लिखा गया है।

सोर अर्थात् पिथौरागढ़ का प्रारम्भिक परिचय

पिथौरागढ़ अर्थात सोर का इतिहास 12 वीं सदी से स्पष्ट, क्रमानुसार एवं प्रामाणिक है। कत्यूरी वंश के पतन के पश्चात् 12 वीं सदी के आस–पास सोर छोटे–छोटे नौ राजाओं के राज्यों में बंटा हुआ था जिस कारण यह **ष्नौ ठुकुर सोरष्** कहलाता था। ये नौ छोटे–छोटे शासक पूर्णतः स्वतंत्र व छोटी–छोटी सीमाओं तक सीमित थे। 12 वीं सदी में सोर के एक तरफ डोटी के रैंका राजा का राज्य व दूसरी तरफ सीमा

विस्तार के लिए संघर्षरत चम्पावत के चन्द राज्य के शासक थे। सोर के **ष्नौ ठुकुर सोरष** अर्थात नौ शासकों के राज्य 12 वीं में निम्नवत थे–

1. उच्चाकोट–वर्तमान में पौंड़ व हुड़ेती के मध्य का भाग।
2. भाटकोट–चैंसर व कुमौंड़ के मध्य का भाग।
3. वैलूर कोट–मौजे व थरकोट के निकट का स्थान।
4. उदयपुर कोट–वर्तमान बाजार के पश्चिम में मौजे व पपदेऊ का ऊपरी भाग।
5. डुगरा कोट–मौजे धारी व पाभे के निकट का स्थान।
6. सहज कोट–बाजार के उत्तर पंडा व उर्ग के ऊपर का स्थान।
7. वमुवा कोट–बाजार के दक्षिण की तरफ का स्थान।
8. देवदार कोट वल्दिया पट्टी में मौजा सिमलकोट के पास का स्थान।
9. टुनी कोट–कासनी के निकट छावनी से पूर्व की ओर का भाग।

उपर्युक्त नौ स्थानों का वर्णन बद्रीदत्त पाण्डेय[4] जी ने **कुमाऊँ का इतिहास** में भी किया है, व एटकिंसन[5] ने भी अपनी पुस्तक में उदयपुर व वैलूर कोट का वर्णन किया है।

उपरोक्त नौ शासकों के बारे में अन्य ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात नही हो सके हैं, इनके द्वारा ऊँची–ऊँची पहाड़ियों में बनाये गये कोट के खण्डहरों के अवशेष अवश्य इनकी पुष्टि करते हैं।

सोर राज्य अथवा वर्तमान पिथौरागढ़ नगर के राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहास को जानने के लिए जिन प्रामाणिक स्रोतों, तथ्यों तथा ऐतिहासिक सामग्री का प्रयोग किया गया है, वह निम्नवत है–

1. मानसखण्ड।
2. ताम्रपत्र।
3. शिलालेख, मृदभाण्ड तथा गुफाएं।
4. बत्यूली संग्रह सामग्रीं।
5. नगर के प्राचीन स्मारक।
6. उर्ग की चित्रकला शैली।
7. लोक साहित्य व जनश्रुतियां।
8. पूर्व लेखकों द्वारा किया गया वर्णन।

मानसखण्ड

पिथौरागढ़ शहर के पौराणिक महत्व को जानने का महत्वपूर्ण साधन मानसखण्ड है। मानसखण्ड में पौराणिक काल में पिथौरागढ़ जनपद के महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों, नदियों, मंदिरों, पर्वतों एवं तत्कालीन भौगोलिक दशाओं का वर्णन किया गया है। मानसखण्ड में अध्याय 11 के श्लोक 14 से 27 में धनवन्तरि द्वारा व्यास जी से कैलास मानसरोवर यात्रा का पथ पूछने पर योगीराज दत्तात्रेय ने कैलास मानसरोवर यात्रा के लिए जो यात्रा पथ धनवन्तरि को पौराणिक काल में बताया, वह यात्रा पथ वर्तमान में भी पिथौरागढ़ नगर से कैलास मानसरोवर तक जाता है। मानसखण्ड में व्यास द्वारा धनवन्तरि को कैलास यात्रा पथ अध्याय 11 के श्लोक 14 से 27 में निम्नवत बताया गया है–

अस्त्युत्तरपथे राजन् हिमाद्रिः पर्वतोत्तमः। तस्य पादतले रम्ये नाम्ना कूर्माचलो गिरीः।।14।।
तीर्थैश्र बहुभिर्युत्तो मृगपक्षिसमन्वितः। गन्तव्यं तत्र राजर्षे ! यत्र कूर्माचलो गिरीः।।15।।
मयूरैः सेवितपदस्तथान्यैः पक्षिराजितः। गण्डकी–लोहसरितोर्मध्ये स्नात्वा महेश्वरम्।।16।।

सम्पूज्यनृपश्शार्दूल!तथाऽन्यान् देवतागणान्। ततस्तु सरयूतीरे दृष्ट्वा तत्र शिलांशुभाम्।।17।।
स्नात्वा तत्र महाराज हंसतीर्थजले शुभे । ततः परं महाभाग सुपुण्यं दारुपर्वतम् ।।18।।
गत्वा सम्पूज्य लोकेशं जम्बुकाख्यं महेश्वरम्। ततः परं महाराज पातालभुवनेश्वरम् ।।19।।
गत्वा सम्पूज्य विधिना समुपोष्य दिनत्रयम्। ततः परं महाराज! रामगग्ङासरिज्जले ।।20।।
स्नात्वा सम्पूज्य बालीषं तथैव शिवकिंकरान्। ततः परं महाराज पावनाख्यं गिरिं व्रजेत ।।21।।
सम्पूज्य पावनं देवं पताकाख्यं गिरिं व्रजेत। पताकेशं हरं तत्र सम्पूज्य विधिपूर्वकम् ।।22।।
ततः सितासितासग्ङे कालीशाख्यं महेश्वरम। गत्वा सम्पूज्य विधिवत् चतुर्दष्ट्रं गिरिं व्रजेत।।23।।
सम्भाव गिरिदंष्ट्रान् तान् पुण्यान्हिमालयोद्भवान। ततो धर्माश्रमं पुण्यं दृष्ट्वा राजर्षिसत्तम।।24।।
धर्मादींल्लोकपालान वैदृष्ट्वा धर्मपदं शुभम्। धर्मद्वारं तु निष्क्रम्य ततो व्यासाश्रमं व्रजेत।।25।।
कृष्णद्वैपायनं व्यासं सम्पूज्य विधिपूर्वकम्। येनेदं परमं पुण्यं स्कन्दोत्पत्तिसमन्वितम् ।।26।।
स्कान्दं शिवकथायुक्तं शतसाहस्रिकं शुभम्। खण्डाख्यानसमायुक्तं चरितं जनमेजय ।।27।।

दत्तात्रेय बोले–हे राजन! उत्तराखण्ड में पर्वतराज हिमाचल है। उसके चरणों पर **कूर्माचंल** नाम की पर्वतश्रेणी है। यह प्रदेश अनेक तीर्थों तथा वन्य पशु–पक्षियों आदि से संकुलित है। राजन! यात्री सर्वप्रथम यात्रा का आरम्भ कूर्माचंल पर्वत से करे। इसकी उपत्यका मोर तथा अन्य पक्षियों से सुशोभित है। वहाँ गण्डकी और लोहावती नदियों के मध्य स्नान करने के उपरान्त भगवान् शंकर एवम् अन्य देवताओं का दर्शन कर यात्री सरयू नदी के तट पर शुभ **कूर्मषिला** को पूजते हुए हंसतीर्थ के जल में स्नान करें। हे महाराज! तदनन्तर **दारुपर्वत** है। वहाँ **पातालभुवनेश्वर** का विधिपूर्वक पूजन कर तीन दिन उपवास करे। तत्पश्चात् रामगंगा में स्नान कर **बालीश** तथा शिव के गणों का पूजन कर पावनपर्वत की ओर जाय। वहाँ **पावनदेव** का पूजन कर **ध्वज पर्वत** पर जाय। वहाँ **ध्वजेश** का पूजन कर **धौली** और **काली** के संगम स्थल पर **कालीश** की विधिवत् पूजा करे। उसके बाद **चतुर्दष्ट्र** (चौंदास) पर्वत की ओर जाय। उस पर्वत के आकार को पवित्र हिमालय के निकले हुए दाँतों की कल्पना कर उनकी पूजा करे। हे राजर्षे! तत्पश्चात् पवित्र **धर्माश्रम** एवं धर्मादि लोकपालों का दर्शन कर शुभ धर्मस्थान–स्वरुप **धर्मद्वार** से निकल कर **व्यासाश्रम**(ब्याँस) पहुँचे। वहाँ विधिपूर्वक कृष्ण द्वैपायन् **महर्षि वेदव्यास** की पूजा करे, जिन्होंने देवसेनानी कार्तिकेय की उत्पत्ति के आख्यान का समावेश कर भगवान शंकर की कथा सहित अनेक खण्डों और आख्यानों को सम्मिलित कर **एक लाख श्लोकों में स्कन्दमहापुराण** की रचना की है।

उपर्युक्त वर्णन में व्यास जी द्वारा कैलास मानसरोवर का यात्रा पथ बताते हुए जिन स्थानों का वर्णन किया गया है वह वर्तमान में भी कैलास मानसरोवर यात्रा पथ में पिथौरागढ़ से जाने वाले मार्ग में पड़ते हैं। उदाहरण के लिए लोहाघाट(लोहावती नदी), रामगंगा नदी, पाताल भुवनेश्वर(गंगोलीहाट), ध्वज पर्वत(कनालीछीना व पिथौरागढ़ के मध्य), काली व गोरी नदी का संगम अर्थात् जौलजीवी, व्यास पट्टी, चौंदास पट्टी(धारचूला) वर्तमान में भी कैलास मानसरोवर यात्रा के मार्ग में ठीक उसी तरह से पड़ते हैं जैसे कि मानसखण्ड में वर्णन किया गया है। मानसखण्ड में कैलास मानसरोवर यात्रा पथ में नगर के मार्गों का वर्णन होने से यह संभावनाएं भी उत्पन्न होती हैं कि पाण्डवों ने अपनी कैलास मानसरोवर यात्रा में इस पथ का प्रयोग किया होगा, क्योंकि स्थानीय जनश्रुतियों में पिथौरागढ़ नगर के थलकेदार की पहाड़ियों पर स्थित नकुलेश्वर का मंदिर पाण्डवों के छोटे भ्राता नकुल द्वारा निर्मित माना जाता है।

अतः स्कन्दपुराण के अन्तर्गत मानसखण्ड पिथौरागढ़ का इतिहास जानने के लिए महत्वपूर्ण पौराणिक स्रोत है।[6]

ताम्रपत्र

पिथौरागढ़ जनपद से प्राप्त होने वाले बम शासकों, चन्द शासकों आदि के ताम्रपत्र नगर का इतिहास जानने के लिए एक प्रमुख साधन हैं। शासकों द्वारा एक ताम्र पट्टिका में राजकीय आदेशों को टंकित कर निम्नलिखित कारणों से ताम्रपत्र दिये जाते थे–

1. जागीर प्रदान करने में।
2. वीरता प्रदर्शित करने पर रौत प्रदान करने में।
3. ब्राह्मणों को भूमि दान करने में।
4. मंदिरों हेतु भूमि दान करने में।

उपर्युक्त कारणों से दिये जाने वाले ताम्रपत्रों में राज्यादेश टंकित रहता था जो कि पुनः आदेशित या शासकों के वंशजों द्वारा अनुमोदित किया जाता था। वर्तमान में पिथौरागढ़ के इतिहास को जानने के सम्बन्ध में बहुत से ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, जो इतिहास अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

पिथौरागढ़ के सम्बन्ध में प्राप्त होने वाले प्रमुख ताम्रपत्र निम्नवत हैं–

1. द्युतिवर्म्मा का तालेश्वर ताम्रपत्र।
2. ज्ञानचन्द व विजय बम (ब्रह्म) का सिलौनी ताम्रपत्र।
3. विजय बम का मझेड़ा ताम्रपत्र।
4. प्रताप बम का छाना ताम्रपत्र।
5. भारती चन्द का हुड़ेती ताम्रपत्र।
6. लक्ष्मण चन्द का मूनाकोट ताम्रपत्र।
7. उदोत्त चन्द का बड़ालू ताम्रपत्र।

शिलालेख

शिलालेख अर्थात् किसी शिला में लेख को अंकित करना भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन कला है। पिथौरागढ़ नगर में कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख पाये गये हैं, जिनमें अंकित लेखों, भाषा शैली, समयकाल व निर्माणकर्ता के उल्लेख से नेपथ्य में छिपा इतिहास सामने आता है। नेपाल मार्ग पर स्थित वड्डा ग्राम के निकट दिगास गांव के मंदिर के प्रवेश द्वार में शाके 1027 का एक शिलालेख अंकित है जिससे इस मंदिर की प्राचीनता ज्ञात होती है। इसके अतिरिक्त काकड़ का सन् 1442 का शिलालेख, भारुड़ी का शिलालेख आदि पिथौरागढ़ के इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं।

मृदभाण्ड

मृदभाण्ड भारतीय प्राचीन इतिहास के सूत्र हैं जिससे मानव विकास के विभिन्न चरणों का इतिहास ज्ञात होता है। पिथौरागढ़ नगर से 1 किलोमीटर दूर भाटकोट नामक स्थान में काले व लाल रंग के मृदभाण्ड पाये गये हैं जिन्हे ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी का माना जाता है। इसके अतिरिक्त जनपद में ईंट व पत्थरों के प्राचीन टुकड़े भी मिले हैं, जो स्वयं में नगर के बीते हुए युग की स्मृति छुपाये हुए हैं।

गुफाएं

पिथौरागढ़ नगर में बहुत सी प्राकृतिक गुफाएं प्राप्त होती हैं जो कभी प्राचीन ऐतिहासिक किरात जाति का निवास स्थान रही है। इन गुफाओं में पाषाण कालीन युग का इतिहास वर्तमान इतिहासकारों को

नगर का प्राचीन कालीन इतिहास जानने के लिए आमंत्रित करता है। पिथौरागढ़ नगर के घुनसेरा, रई, कासनी, कपिलेश्वर तथा भाटकोट की गुफाएं प्राकृतिक रूप से निर्मित है।

नगर के प्राचीन स्मारक

किसी भी स्थान के प्राचीन स्मारकों में उस स्थान का सांस्कृतिक इतिहास छिपा रहता है, जो उस समय एवं काल की मनोवृत्ति का परिचायक होता है। स्मारकों से तत्कालीन सांस्कृतिक रुचि, स्थापत्य कला, मूर्ति कला आदि का इतिहास ज्ञात होता है। पिथौरागढ़ नगर में बहुत से प्राचीन स्मारक हैं, जो कि शहर की प्राचीन विरासत को समेटे हुए नगर का इतिहास जानने के लिए प्रमुख साधन है।

नगर के प्रमुख प्राचीन स्मारक निम्न हैं–

1. मंदिर एवं मूर्तियां।
2. बुंगा या कोट व वीर खम्भ।
3. जल स्रोत व नौला।

मंदिर एवं मूर्तियां

नगर में प्राचीन व सैकडों वर्षो पूर्व निर्मित मंदिर विद्यमान हैं जो वर्षों पूर्व शीर्ष में पहुंची स्थानीय स्थापत्य कला का नमूना है। कहीं–कहीं इन मूर्तियों में दक्षिण की मूर्ति कला का प्रभाव भी दिखाई देता है। इन मंदिरों के अध्ययन से प्राचीन समय में नगर की जनता की धार्मिक भावनाएं, आराध्य देव, स्थापत्य कला व मूर्ति कला का परिचय प्राप्त होता है। नगर में नकुलेश्वर का मंदिर, घुनसेरा गांव का मंदिर, अर्जुनेश्वर, मरसौली, ध्वज, असुरचूला, उल्का देवी, कामाक्ष्या देवी, रई, चण्डाक, शेरादेवल आदि अनेकों मंदिर विद्यमान हैं, जो पिथौरागढ़ के सांस्कृतिक इतिहास को जानने के अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है।

कुछ महत्वपूर्ण मंदिरों एवं मूर्तियों की विस्तार से समीक्षा खण्ड **पिथौरागढ़–धार्मिक दृष्टिकोंण** में की गई है।

बुंगा या कोट व वीरखम्भ

पिथौरागढ़ जनपद में अनेक छोटे व बड़े बुंगे या कोट विद्यमान हैं। यह बुंगे या कोट बम व चन्द शासकों के शासनकाल में स्थानीय ग्रामों के प्रमुख व्यक्तियों का निवास स्थान हुआ करते थे। दो या तीन मंजिल तक पत्थरों व लकड़ी से बने बुंगे एक शक्तिशाली किले की तरह होते थे। यहाँ ग्राम का प्रमुख व्यक्ति बैठकर जन समस्याओं का निवारण करता व जनता का सम्बन्ध शासन की नीतियों से जोड़ता था। आज भी नगर में बहुत से बुंगे टूटी फूटी अवस्था में पिथौरागढ नगर का इतिहास छिपाये हुए हैं। नगर के कुछ प्रमुख कोट जैसे कुमौड़ का कोट, भत्यूर का कोट, जाखनी, थरकोट, टकाड़ी का कोट आदि हैं।

जलस्रोत(नौला)

पिथौरागढ़ नगर की एक प्रमुख विरासत है जल का स्रोत अर्थात् स्थानीय उच्चारण नौला। आज भी नगर में बमकालीन व चन्दकालीन ऐतिहासिक नौले प्राप्त होते हैं यह नौले स्वयं में स्थापत्य कला व तत्कालीन इतिहास की सांस्कृतिक विरासत को समेटे हुए है। रानी का नौला, एक हथिया नौला, कौत का नौला, कांकड़ का नौला तथा शिवालय का नौला आज भी नगर में विद्यमान है। रानी का नौला तत्कालीन

स्थापत्य कला का सुन्दर नमूना है, नौले में उत्कृष्ट चित्रों को अंकित किया गया है। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार इस नौले को पिथौरागढ़ के बम शासकों द्वारा निर्मित बताया गया है।

बत्यूली संग्रह सामग्री

थल के पास बत्यूली ग्राम का बत्यूली ऐतिहासिक संग्रह पिथौरागढ़ के इतिहास को जानने के लिए अति आवश्यक है। बत्यूली ग्राम में श्री देवी दत्त जोशी के पास चन्द, मल्ल, खस व पाल वंश आदि की वंशावली तथा उनके द्वारा भूमि सम्बन्धित व्यवस्था के महत्वपूर्ण दस्तावेज, बहीखाते आदि प्राप्त होते हैं जिसकी सहायता से हमे चन्द, मल्ल, पाल, खस आदि की प्रामाणिक वंशावली उनके तत्कालिक नाम तथा शासनकाल की महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं।

बत्यूली संग्रह में निम्नलिखित ऐतिहासिक साधन प्राप्त होते हैं–

1. ताम्रपत्र।
2. मल्ल, चन्द, पाल, खस वंशावली।
3. भूमि सम्बन्धी बहीखाते।
4. कर सम्बन्धी बहीखाते आदि।

उर्ग की चित्रकला शैली

पिथौरागढ़ जनपद के अंतर्गत उर्ग ग्राम में श्री श्रीधर जोशी से महत्वपूर्ण मध्यकालीन चित्रकला के सुन्दर पांच नमूने प्राप्त हुए हैं। ये चित्र गढ़वाली, कांगड़ा या राजपूती चित्रकला शैली से भिन्न हैं। इन चित्रों में दरबारी चित्रकला की तड़क भड़क के स्थान पर सादगी चित्रित की गई है। इन चित्रों का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश इतिहास कान्फ्रेंस 1992 के अवसर पर किया गया था। उर्ग के चित्रों की प्राप्ति तथा उनके चित्रण की विशेषता से यह प्रश्न उत्पन्न हुआ है कि क्या गढ़वाली, कांगड़ा या राजपूती शैली की तरह कुमाऊँ की चित्रकला शैली अस्तित्व में थी, क्योंकि इन प्राप्त चित्रों में कांगड़ा, गढ़वाली या राजपूती चित्रकला शैली का स्पष्ट प्रभाव नही दिखाई देता।

उर्ग से प्राप्त पांचों चित्र **पंचायन गीता** नामक पुस्तक में महाभारत की कथाओं के आधार पर चित्रित हैं। ये चित्र निम्नवत हैं–

1. गजेन्द्र मोक्ष–इस चित्र में हाथी को मगरमच्छ द्वारा पकड़ा हुआ दिखाया गया है।
2. गीता उपदेश–यह श्रीकृष्ण व अर्जुन का चित्र है।
3. शेषशयी नारायण–इस चित्र में सांप पर नारायण को सोता हुआ दिखाया गया है।

इसी तरह की पत्थर पर बनी हुई आकृति ग्राम बजेठी में एक आदित्य(आजिद्यौः) देव जी के मंदिर(**चित्र सं0 5/2.2**), में भी पाई गयी है जिसमें भगवान विष्णु को सांप पर सोता हुआ और लक्ष्मी जी को उनके पैर दबाते हुआ दिखाया गया है।

4. शर शैय्या भीष्म–तीरों की शैय्या पर भीष्म को सोया हुआ चित्रित किया गया है।
5. भीष्म उपदेश–भीष्म को उपदेश देते हुए चित्रित किया गया है।

उर्ग चित्रकला शैली की विशेषताएं

उर्ग से प्राप्त उपर्युक्त चित्रों में निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

1. शेषशयी नारायण चित्र में शिव को इस प्रकार से अंकित किया गया है , जैसे जनपद में आज भी श्रावण में मिट्टी की शिवमूर्ति डिगार बनायी जाती है जिससे यह निस्कर्ष निकलता है कि स्थानीय डिगार के निर्माण की शैली व तात्कालिक चित्रों में एकता के लक्षण हैं।
2. जिस रंग से चित्र चित्रित किये गये हैं उसी रंग से पुस्तक का लेखन भी हुआ है।
3. चित्रों में तड़क भड़क नहीं वरन् सादगी है।
4. चित्रों को जिस कागज पर चित्रित किया गया है वह स्थानीय है। स्थानीय कागज को प्रसिद्ध इतिहासकार बद्रीदत्त पाण्डेय ने बडुवा पेड़ से निर्मित बताया गया है।
5. चित्रों के चित्रण में सातों रंगों का प्रयोग किया गया है, चित्र चमकदार व उभरे हुए हैं।

उर्ग से प्राप्त पांचों चित्रों ने पिथौरागढ़ के इतिहास को एक महत्वपूर्ण तथ्य प्रदान किया है, जिससे पिथौरागढ़ के सांस्कृतिक उत्थान व चित्रकला शैली का इतिहास ज्ञात होता है और कुमाऊँ की विशिष्ट कुमाऊँनी चित्रकला शैली(जिसके उदाहरण दंशार, ज्यूंती, जन्मकुण्डली तथा ग्रह चित्रांकन आदि हैं) पर प्रकाश पड़ता है।

सिक्के

किसी भी राज्य की अर्थव्यवस्था का एक पहिंया है रुपया और रुपये का एक अंग है सिक्का। कुमाऊँ में शासन करने वाले शासकों ने राज्य द्वारा प्रमाणित सिक्कों का चलन प्रारम्भ किया। यह सिक्के तत्कालीन क्रय विक्रय का आधार थे। पिथौरागढ़ में चन्दकालीन, गोरखाकालीन व अंग्रेजी शासनकाल के महत्वपूर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं, जो उस समय की अर्थव्यवस्था व शासन की आर्थिक नीति का सूचक है। इन सिक्कों की सहायता से हम पिथौरागढ़ का आर्थिक इतिहास ज्ञात कर सकते हैं।

लोक साहित्य

पिथौरागढ़ नगर छोटे–छोटे ग्रामों से मिलकर बना है, जिनका अपना लोक साहित्य है। मिट्टी से जुड़े जनमानस द्वारा वर्णित गाथा, कथा, गीत आदि लोक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग हैं। लोक साहित्य किसी के द्वारा लिखा गया नहीं वरन् पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षण प्राप्त कर, स्वयं में सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक इतिहास को समाये वर्तमान में हम तक एक लम्बी यात्रा के पश्चात पहुंचता है। पिथौरागढ़ नगर में लोक साहित्य ग्राम–ग्राम में निम्न रूपों में बिखरा हुआ है–

1. लोक गाथाएं।
2. लोक कथाएं।
3. लोक गीत।

उदाहरणार्थः झोडा, हुड़किया बाल, कटूक गीत, ऋतु गीत तथा धर्म संस्कार गीत आदि।

4. मुहावरे।
5. किस्से आदि।

लोक साहित्य से हमें नगर का ऐतिहासिक परिचय मिलता है, उदाहरण के लिए एक कटूक गीत में रतन चन्द द्वारा डोटी आक्रमण करने का व पिथौरागढ़ को डोटी के लिए मार्ग बनाने का वर्णन प्राप्त होता है।

पूर्व लेखकों द्वारा वर्णन

पिथौरागढ़ के संदर्भ में बहुत से लेखकों ने अपनी पुस्तकों में पिथौरागढ़ का वर्णन किया है, किसी ने इसे सोर लिखा है, किसी ने पिठौरागढ़ परन्तु सभी शब्दों का तात्पर्य वर्तमान पिथौरागढ़ नगर से है। प्रख्यात इतिहासकार **ई0 टी0 एटकिंसन**[2] ने **गजेटियर ऑफ हिमालयन डिस्ट्रिक्ट ऑफ नार्दन वेस्टर्न प्रोविन्स**, चार्ल्स शेरिंग[7] ने **तिब्बत एण्ड बोर्डर लैण्ड**, राहुल सांस्कृत्यायन[8] ने **कुमाऊँ**, उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध इतिहासकार शिवप्रसाद डबराल[9] ने **उत्तराखण्ड का इतिहास**, बद्रीदत्त पाण्डेय[12] ने **कुमाऊँ का इतिहास**, राम सिंह[10] ने पहाड़ पत्रिका लेख **सोर का विस्मृत अतीत**, श्यामलाल कोली[11] ने **पिथौरागढ का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास**, आशा जोशी[12] ने **पिथौरागढ़ जनपद का इतिहास** तथा अन्य इतिहासकारों एवं पुरातत्वविदों **द्वारा**[13,14,15] अपनी पुस्तकों में पिथौरागढ़ के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गई हैं।

पिथौरागढ़ के इतिहास के ज्ञान के सम्बन्ध में उपर्युक्त लेखकों की पुस्तकें महत्वपूर्ण साधन हैं। अतः उपर्युक्त स्रोतों एवं साधनों की सहायता से हम पिथौरागढ़ के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करते हुए पिथौरागढ़ नगर के इतिहास को क्रमानुसार निम्न युगों में विभाजित कर सकते हैं।

1. मृदभाण्ड का युग(ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी)।
2. पर्वताकार राज्य का युग(छठी से सातवीं शताब्दी तक)।
3. कत्यूरी आासन अर्थात् छोटे–छोटे राजाओं का युग(सातवीं सदी से तेरहवीं सदी तक)।
4. बम शासकों का युग(तेरहवीं सदी से सन् 1420 तक)।
5. चन्द शासकों का युग(सन् 1420 से 1790 ई0 तक)।
6. गोरखा शासकों का युग(सन् 1790 से 1815 ई0 तक)।
7. अंग्रेजों का युग(सन् 1815 से 1947 ई0 तक)।
8. स्वतंत्रता से वर्तमान तक(सन् 1947 से अब तक)।

संदर्भ

1 षविकास की ओर पिथौरागढ़–2003ष, जिला सूचना अधिकारी, सूचना विभाग, पिथौरागढ।

2 ऐटकिंसन, ई0 टी0 षाजेटियर ऑफ द हिमालयन डिस्ट्रिक्टस् ऑफ द नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज आफ इण्डियाष, प्रथम सं0–1882, द्वितीय सं0–1884, तृतीय सं0–1886, नॉर्थ–वेस्ट प्रोविंसेज एण्ड अवध प्रेस, इलाहाबाद। पुनर्मुद्रण–हिमालयन गजेटियर, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1973।

3 भण्डारकर, डी0 आर0 षअशोकष, एस0 चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1960।

4 पाण्डेय, बद्रीदत्त षकुमाँऊ का इतिहासष, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, संस्करण, 1990।

5 ऐटकिंसन, ई0 टी0 षहिमालयन गजेटियरष, पृ0 34।

6 स्कन्दपुराण अंतर्गत षानसखण्डष, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् 2061, पद 14 से 27, पृ0 76–77।

7 शेरिंग, चार्ल्स ए0 षवैस्टर्न तिब्बत एण्ड ब्रिटिश बोर्डर लैण्डष, नई दिल्ली, 1906, 1973।

8 सांस्कृत्यायन, राहुल षकुमाँऊष ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, 1959।

9 डबराल, शिवप्रसाद षउत्तराखण्ड का इतिहासष, भाग एक से दस, दो गड्डा, गढ़वाल, 1965, 1987।

10 सिंह, राम षसोर का विस्मृत अतीतष पहाड़, अंक 5–6, पृ0 21–30।

11 कोली, श्याम लाल षपिथौरागढ़ का राजनैतिक एवं साँस्कृतिक इतिहासष, कालेश्वर प्रेस, कोटद्वार(गढ़वाल), प्रथम संस्करण, 1989।

12 जोशी, आशा षपिथौरागढ़ जनपद का इतिहासष, लेखक एवं प्रकाशक स्वयं, प्राप्ति स्थान–जयन्ती पुस्तक भण्डार, पिथौरागढ़।

13 जोशी, सुभाष चन्द्र षुर की कृति–विष्णु व सूर्य प्रतिमाष पत्र अमर उजाला (प्रभारी, सुमेरु संग्रहालय 7/92, टकाना मार्ग, पिथौरागढ़)।

14 षविकास की ओर पिथौरागढ़–2003ष, प्रकाशक–जिला सूचना अधिकारी, सूचना विभाग, जनपद पिथौरागढ़।

15 बख्श, एहसान षपिथौरागढ़–पवित्र कैलास मानसरोवर यात्रा पथष, इरा प्रकाशन, पिथौरागढ़, प्रथम संस्करण , मई 1995।

चित्र–1
उत्तराखण्ड
राज्य के जनपद

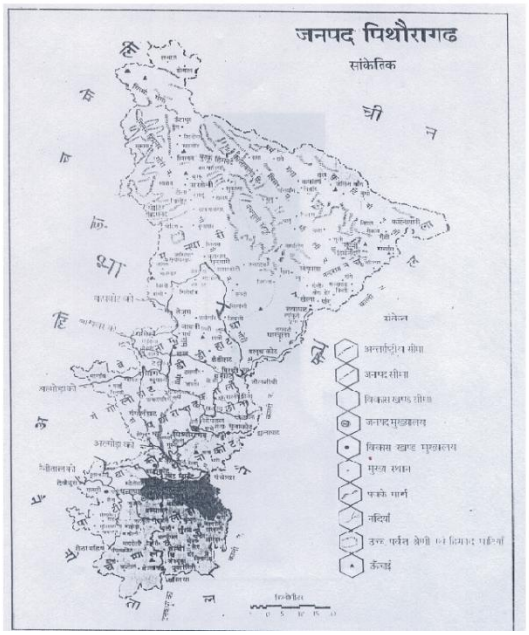

चित्र सं0 (3) पिथौरागढ़ शहर के मुख्य गांवों/मोहल्लों को प्रदर्शित करता मानचित्र

चित्र सं0 (2.2) भगवान आदित्य देव (आजिधी) जी की लेटी हुई प्रतिमा जिसमें लक्ष्मी जी को पैर दबाते हुये चित्रित किया गया है , बजेठी ग्राम में स्थापित है।

चित्र सं० (2.1) राजा पृथ्वी शाही की मूर्ति(हनुमान मन्दिर के पास पहाड़ी के ऊपर) जिनके नाम पर शहर का नाम पिथौरागढ़ पड़ा।